स्वर्ण जयंती

Golden Jubilee

देवनागरी लिपि तथा हिंदी वर्तनी का मानकीकरण

केंद्रीय हिंदी निदेशालय

मानव संसाधन विकास मंत्रालय (उच्चतर शिक्षा विभाग)

भारत सरकार

मानक हिंदी वर्णमाला और वर्तनी

भारत संघ तथा कुछ राज्यों की राजभाषा स्वीकृत हो जाने के फलस्वरूप हिंदी का मानक रूप निर्धारित करना बहुत आवश्यक था, ताकि वर्णमाला में सर्वत्र एकरूपता रहे और टाइपराइटर, कंप्यूटर आदि आधुनिक यंत्रों के उपयोग में लिपि की अनेकरूपता बाधक न हो।

इन सभी बातों को ध्यान में रखकर केंद्रीय हिंदी निदेशालय ने शीर्षस्थ विद्वानों आदि के साथ विचार विमर्श के पश्चात् हिंदी वर्णमाला तथा अंकों का जो मानक रूप निर्धारित किया, वह इस प्रकार है :-

हिंदी वर्णमाला

स्वर Vowels	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ए	ऐ	ओ	औ
मात्रा	–	ा	ि	ी	ु	ू	ृ	े	ै	ो	ौ
उदाहरण	क	का	कि	की	कु	कू	कृ	के	कै	को	कौ
ध्यान दें	र् + उ = रु					र् + ऊ = रू					

मूल व्यंजन Consonants -

क	ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ	ण
त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म
य	र	ल	व	
श	ष	स	ह	
ड़	ढ़			

संयुक्त व्यंजन Consonant Cluster क्ष त्र ज्ञ श्र

टिप्पणी : (क्+ष = क्ष) (त्+र = त्र) (ज्+ञ = ज्ञ) (श्+र = श्र)
आधुनिक हिंदी में /ज्ञ/का उच्चारण 'ग्य' होता है।

विशेषक चिह्न - Diacritic Marks

अनुस्वार	ं	(जैसे - हंस)
चंद्रबिंदु (अनुनासिक चिह्न)	ँ	(जैसे - साँस)
विसर्ग	ः	(जैसे - प्रात:)
हल् चिह्न	्	(जैसे - वाक्)

आगत ध्वनियों के वर्ण

स्वर ॉ (जैसे - कॉलेज)

व्यंजन ख़ (जैसे - सख़्त)

ज़ (जैसे - मेज़)

फ़ (जैसे - साफ़)

अंक देवनागरी १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ ०

भारतीय अंकों का अंतरराष्ट्रीय रूप **1 2 3 4 5 6 7 8 9 0**

संयुक्त व्यंजन

हिंदी में संयुक्त व्यंजन निम्नलिखित चार प्रकार से बनते हैं

(1) **'क' और 'फ'** के हुक को हटाकर

क् + त = क्त (मुक्त) फ़् + त = (मुफ़्त)

(2) **खड़ी पाई वाले वर्ण :** पाई हटा कर बनते हैं :-

ख् + य = मुख्य	ग् + न = लग्न	घ् + न = विघ्न
च् + च = उच्च	ज् + व = ज्वाला	ण् + य = पुण्य
त् + त = कुत्ता	थ् + य = तथ्य	ध् + व = ध्वज
न् + म = जन्म	प् + य = प्यार	ब् + द = शब्द
भ् + य = सभ्य	म् + म = सम्मान	य् + य = शय्या
ल् + क = शुल्क	व् + य = व्यापार	श् + व = श्वास
ष् + ट = कष्ट	स् + म = स्मरण	ख़् + त = सख़्त
ज़् + ब = जज़्बात	ख़् + त = सख़्त	ज़् + म = नज़्म
तीन व्यंजन वाले	क्ष् + य = लक्ष्य	त्र् + य = त्र्यंबक
	त् + र् + य = स्वातंत्र्य/स्वास्थ्य	

(3) **बिना खड़ी पाई वाले वर्ण** - वर्ण के नीचे हल् चिह्न लगा कर बनते.हैं।

ङ् + म = वाङ्मय	छ् + व = उच्छ्वास	ट् + ट = लट्टू
ठ् + य = पाठ्य	ड् + य = ड्योढ़ी	ढ् + य = धनाढ्य
द् + व = विद्वान	द् + य = विद्या	ह् + म = ब्रह्म
ह् + न = चिह्न	ह् + व = जिह्वा	

(4) **'र' के तीन रूप हैं**

(1) **र्** + क(र्क) = तर्क (2) **क्** + र(क्र) = क्रम

(3) **ट्** + र(ट्र) = ट्राम, राष्ट्र

अन्य उदाहरण -

र् + र (र्र)दर्रा **द्** + र(द्र) = द्रव **ड्** + र(ड्र) = (ड्रामा)

ह् + र = (ह्र) = ह्रास

वर्तनी का मानकीकरण

1. परसर्ग शब्द

(i) संज्ञा और विशेषण शब्द के साथ **ने, को, से, का, में** आदि परसर्ग अलग लिखे जाएँ – गाँधी जी ने, बच्चों को, घर पर आदि।

(ii) क– सर्वनामों के साथ परसर्ग मिलाकर लिखे जाएँ – मैंने, आपको, उसपर, किससे आदि। सर्वनाम के बाद 'ही, तक' आएँ तो परसर्ग अलग लिखे जाएँ – आप ही को, उस तक को (ध्यान दें – 'मैंने ही') आदि।

ख– सर्वनाम के साथ यदि दो परसर्ग हों तो पहला मिलाकर और दूसरा अलग लिखा जाए – उसके लिए, इसमें से आदि।

2. क्रिया पद

क्रिया पद के भीतर आने वाले सारे शब्द अलग लिखे जाएँ –
जाता था, पढ़ा करता था, किया जा सकता है, बढ़ते चले जा रहे हैं आदि।

3. योजक चिह्न (हाइफ़न)

(i) द्‌वंद्‌व समास वाले शब्दों के बीच योजक चिह्न अवश्य लगाया जाए– धीरे-धीरे, आटे-दाल का भाव, छोटे-बड़े, चाल-चलन, जाते-जाते, पढ़ना-लिखना आदि।

(ii) तुलना के लिए प्रयुक्त 'सा' के पहले योजक चिह्न का प्रयोग किया जाए– तुम-सा, चाँद-सा मुखड़ा, चाकू-से तीखे आदि

(iii) तत्पुरुष समास के वे शब्द जो किसी एक संकल्पना के सूचक हों उन्हें मिलाकर लिखा जाए– ग्रामसभा, आत्महत्या, भाषाविज्ञान आदि।

(iv) कुछ समरूप शब्दों में अर्थ भ्रम दूर करने के लिए तत्पुरुष समास में भी योजक चिह्न का प्रयोग अवश्य किया जाए – भू-तत्व (भूमि के तत्व) – (समस्त पद है); भूतत्व (भूत होने का भाव) – (भूत के साथ प्रत्यय जुड़ा है)

(v) कठिन संधियों से बचने के लिए भी योजक चिह्न का प्रयोग किया जा सकता है :– द्‌वि-अक्षर (द्‌व्यक्षर), द्‌वि-अर्थक (द्‌व्यर्थक), त्रि-आक्षरिक (त्र्याक्षरिक) आदि।

4. अव्यय

(i) 'जी, श्री, भर, मात्र' शब्द से अलग लिखे जाएँ।
जैसे – बाबू जी, पिता जी, श्री राजेंद्र, दिन भर की दौड़-धूप, इतना भर बता दो, पाँच रुपए मात्र, निमित्त मात्र।

(ii) समस्त पदों में प्रति, यथा आदि अव्यय पृथक न लिखे जाएँ – प्रतिशत, प्रतिदिन, यथासमय, यथोचित आदि।

5. श्रुतिमूलक 'य' और 'व' के शब्द

(i) श्रुतिमूलक 'य' और 'व' का प्रयोग क्रिया रूपों में होता है। क्रिया रूप इस तरह से बनेंगे –

आया आए, आई आईं

(हुवा...) हुआ हुए हुई हुईं

(ii) जिन शब्दों में मूल रूप से 'य' और 'व' शब्द के अंग हों, तो वे छोड़े नहीं जा सकते। जैसे–

पराया – पराये	पहिया – पहिये
रुपया – रुपये	दायाँ – दायें
करुणामय – करुणामयी	उत्तरदायी – उत्तरदायित्व

स्थायी, अव्ययीभाव आदि।

6. अनुस्वार (बिंदी या शिरोबिंदु)

(i) 'य' से 'ह' तक कई शब्दों में अनुस्वार का प्रयोग निम्न प्रकार से होगा। यहाँ अनुस्वार के स्थान पर व्यंजन न लिखे जाएँ। जैसे–

संरचना, संताप, संवाद, संशय, दंष्ट्रा, संसार, संयम, संरक्षण, सिंह।

(ii) अन्य नासिक्य व्यंजनों के साथ संयुक्त व्यंजन के रूप इस प्रकार बनेंगे, जैसे – अन्वय, वाङ्मय, अन्य, ताम्र, काम्य, सम्हालना, अम्ल।

(iii) अंग्रेज़ी और उर्दू शब्दों में स, श, ज़, से पहले 'न' के उच्चारण के लिए अनुस्वार लिखें। जैसे – पेंसिल, मुंशी, मंज़िल, पेंशन, मंज़ूरी।

(iv) पंचमाक्षर – संयुक्त व्यंजन के रूप में पंचम वर्ण (नासिक्य) उसी वर्ग के पहले चार वर्णों के साथ नासिक्य का उच्चारण देता है।

क – वर्ग	अंक, शंख, जंग, संघ
च – वर्ग	चंचल, पंछी, पंजा, झंझट
ट – वर्ग	टंटा, कंठ, डंडा, षंढा
त – वर्ग	अंत, पंथ, बंद, अंधा
प – वर्ग	कंपन, गुंफन, संबल, संभव

(v) पंचम वर्णों का द्वित्व आधे व्यंजन से लिखा जाए। जैसे– विषण्ण, अन्न, सम्मान, सम्मेलन।

(vi) तत्सम शब्दों के अंत में अनुस्वार का प्रयोग 'म्' का सूचक है। जैसे – अहं (अहम्), एवं (एवम्), शिवं (शिवम्)

(vii) अंग्रेज़ी और उर्दू से गृहीत शब्दों में नासिक्य व्यंजन पूरा लिखा जाए। जैसे – लिमका, तनख्वाह, तिनका, तमगा, कमसिन, इनकार, इनसान।

7. अनुनासिक चिह्न (चंद्रबिंदु)*

(i) अनुनासिक चिह्न व्यंजन नहीं है, स्वरों का ध्वनि गुण है। इसमें स्वर के उच्चारण में मुख के साथ-साथ नाक से भी हवा निकलती है – अँ, आँ, उँ, ऊँ, एँ। जैसे – हँसना, आँख, उँगली, ऊँट, जाऊँ, जाएँ।

(ii) वर्ण की शिरोरेखा के ऊपर मात्रा हो तो अनुनासिकता को मुद्रण/लेखन की सुविधा के लिए बिंदी से दिखाया जाता है। जैसे – सिंचाई, नींद, गेंद, में, पैंतीस, हैं, गोंद, लोगों ने, औंधा। (वस्तुतः यहाँ बिंदी अनुनासिकता की ही सूचक है अनुस्वार की नहीं।)

***टिप्पणी** बच्चों की पाठ्य पुस्तकों में मोटे टाइप वाले अक्षरों में सही उच्चारण सिखाने के लिए नीँद गोँद, आदि को चंद्रबिंदु से ही दिखाया जाए तो सुविधा होगी।

8. विसर्ग

(i) तत्सम शब्दों के अंत में जहाँ विसर्ग का प्रयोग होता है, वहाँ उनका लोप न किया जाए। जैसे – पुनः, अतः, प्रातः, प्रायः। इन शब्दों से अंतःपुर, अंतःकरण, प्रातःकाल स्वतः, प्रातःकाल, अंततः, मूलतः क्रमशः आदि शब्द बनते हैं।

(ii) कुछ शब्द संधि के नियमों से बनते हैं, इसलिए इनमें विसर्ग के स्थान पर व्यंजन आते हैं। जैसे– निः + वचन = निर्वचन   निः + छल = निश्छल

दुः + साहस = दुस्साहस   निः + शब्द = निश्शब्द

9. हल चिह्न

(i) अगर व्यंजन को स्वर के बिना दिखाना हो तो उसमें हल् चिह्न लगता है। ऐसे वर्ण को हलंत व्यंजन कहा जाता है।

(ii) वर्णमाला में व्यंजनों को उच्चारण की सुविधा के लिए 'अ' स्वर से युक्त ही दिखाया जाए।

(iii) प्राग्दिशा, वाग्देवी, साक्षात्कार, जगन्नाथ आदि का समास विग्रह करें तो पहला शब्द हलंत होगा।

(iv) 'संसद', 'परिषद' के साथ हल् का प्रयोग वैकल्पिक है। तत्सम शब्द के रूप में यदि कोई इन शब्दों को हलंत लिखे तो उसे अशुद्ध न माना जाए।

(v) हे राजन्, भगवन् जैसे तत्सम संबोधन शब्दों में हल चिह्न का प्रयोग करें, अन्यथा हे राजा, हे भगवन् का प्रयोग किया जाए।

(vi) शिक्षण में संधि विच्छेद करने पर हल चिह्न ज़रूर दिखाएँ।
जैसे– उन्नयन = उत् + नयन, उल्लास = उत् + लास
जगन्माता = जगत् + माता।

(vii) जो शब्द संस्कृत के महत्, विद्वत् आदि से बने हैं, उनमें हल् चिह्न न लगाने का प्रयत्न किया जाए। उदाहरण दे दें।

10. तीन व्यंजनों के गुच्छ

निम्नलिखित शब्दों में तीन की जगह दो व्यंजनों वाले शब्दों का प्रयोग बेहतर होगा। जैसे- महत्त्व - **महत्व**, तत्त्व - **तत्व**, अद्र्ध - **अर्ध**

(टिप्पणी - तुलना के लिए उज्ज्वल (उत् + ज्वल), प्रज्वलित (प्र + ज्वलित) के वर्तनी रूपों पर विशेष ध्यान दें।)

11. ऐ/औ के शब्द

(i) कौवा का उच्चारण 'कव्वा' जैसा है तथा भैया का 'भय्या'। उच्चारण को ध्यान में रखते हुए शब्दों की वर्तनी देखिए, जैसे- कौवा, चौवन, पौवा, हौवा, गैया, सवैया, तैयार, ऐयाशी, रवैया।

(ii) संस्कृत शब्द शय्या 'शयन' से बना है। इसे शैया न लिखें।

12. पूर्वकालिक प्रत्यय 'कर'

पूर्वकालिक प्रत्यय 'कर' क्रिया से मिलाकर लिखा जाए। जैसे - खाकर, मिलाकर, रो-रोकर।

13. 'वाला' प्रत्यय

(i) जब 'वाला' प्रत्यय से दूसरा संज्ञा या विशेषण शब्द बने तो वह एक शब्द के रूप में मिलाकर लिखा जाए। जैसे - फूलवाली, टोपीवाली, गाँववाला, जानेवाले लोग।

(ii) अन्य स्थानों में 'वाला' को अलग करके लिखें।

हम वहाँ <u>जाने ही वाले</u> हैं।

वह <u>पहला वाला</u> मकान।

14. विदेशी ध्वनियाँ

(i) अरबी-फ़ारसी या अंग्रेज़ी मूलक वे शब्द जो हिंदी के अंग बन चुके है और जिनकी विदेशी ध्वनियों का हिंदी ध्वनियों में रूपांतरण हो चुका है, उनके लिए हिंदी रूप ही स्वीकार किए जाएँ। जैसे - कलम, किला, दाग आदि (क़लम, क़िला, दाग़ नहीं); पर जहाँ उनका शुद्ध विदेशी रूप में प्रयोग दिखाना अभीष्ट हो अथवा उच्चारणगत भेद बताना आवश्यक हो वहाँ उनमें यथास्थान नुक्ते लगाए जाएँ।

जैसे- खाना-दवा खाने जाना है : ख़ाना-दवाख़ाने जाना है।

राज : राज़, फन (साँप का) : फ़न

सारांश में यह कहा जा सकता है कि अरबी-फ़ारसी एवं अंग्रेज़ी की मुख्यत: क़, ग़, ख़, ज़, फ़ और ऑ ध्वनियाँ हिंदी में आई हैं जिनमें से दो 'क़ और ग़' तो हिंदी उच्चारण में परिवर्तित हो गई हैं, एक 'ख़'

(vii) जो शब्द संस्कृत के महत्, विद्वत् आदि से बने हैं, उनमें हल् चिह्न न लगाने का प्रयत्न किया जाए। उदाहरण दे दें।

10. तीन व्यंजनों के गुच्छ

निम्नलिखित शब्दों में तीन की जगह दो व्यंजनों वाले शब्दों का प्रयोग बेहतर होगा। जैसे- महत्त्व - **महत्व**, तत्त्व - **तत्व**, अद्‌र्ध - **अर्ध**
(टिप्पणी - तुलना के लिए उज्ज्वल (उत् + ज्वल), प्रज्वलित (प्र + ज्वलित) के वर्तनी रूपों पर विशेष ध्यान दें।)

11. ऐ/औ के शब्द

(i) कौवा का उच्चारण 'कव्वा' जैसा है तथा भैया का 'भय्या'। उच्चारण को ध्यान में रखते हुए शब्दों की वर्तनी देखिए, जैसे- कौवा, चौवन, पौवा, हौवा, गैया, सवैया, तैयार, ऐयाशी, रवैया।

(ii) संस्कृत शब्द शय्या 'शयन' से बना है। इसे शैया न लिखें।

12. पूर्वकालिक प्रत्यय 'कर'

पूर्वकालिक प्रत्यय 'कर' क्रिया से मिलाकर लिखा जाए। जैसे - खाकर, मिलाकर, रो-रोकर।

13. 'वाला' प्रत्यय

(i) जब 'वाला' प्रत्यय से दूसरा संज्ञा या विशेषण शब्द बने तो वह एक शब्द के रूप में मिलाकर लिखा जाए। जैसे - फूलवाली, टोपीवाली, गाँववाला, जानेवाले लोग।

(ii) अन्य स्थानों में 'वाला' को अलग करके लिखें।
हम वहाँ जाने ही वाले हैं।
वह पहला वाला मकान।

14. विदेशी ध्वनियाँ

(i) अरबी-फ़ारसी या अंग्रेज़ी मूलक वे शब्द जो हिंदी के अंग बन चुके है और जिनकी विदेशी ध्वनियों का हिंदी ध्वनियों में रूपांतरण हो चुका है, उनके लिए हिंदी रूप ही स्वीकार किए जाएँ। जैसे - कलम, किला, दाग आादि (क़लम, क़िला, दाग़ नहीं); पर जहाँ उनका शुद्ध विदेशी रूप में प्रयोग दिखाना अभीष्ट हो अथवा उच्चारणगत भेद बताना आवश्यक हो वहाँ उनमें यथास्थान नुक्ते लगाए जाएँ।

जैसे-	खाना-दवा खाने जाना है :	ख़ाना-दवाख़ाने जाना है।
	राज : राज़,	फन (साँप का) : फ़न

सारांश में यह कहा जा सकता है कि अरबी-फ़ारसी एवं अंग्रेज़ी की मुख्यतः क़, ग़, ख़, ज़, फ़ और ऑ ध्वनियाँ हिंदी में आई हैं जिनमें से दो 'क़ और ग़' तो हिंदी उच्चारण में परिवर्तित हो गई हैं, एक 'ख़'

लगभग हिंदी 'ख' में खपने की प्रक्रिया में है और शेष दो 'ज़, फ़' धीरे-धीरे अपना अस्तित्व खोने/बनाए रखने के लिए संघर्षरत हैं।

(ii) अंग्रेज़ी के जिन शब्दों में अर्धविवृत 'ऑ' ध्वनि का प्रयोग होता है, उनके शुद्ध रूप का हिंदी में प्रयोग अभीष्ट होने पर 'आ' की मात्रा (ा) के ऊपर अर्धचंद्र का (ऑ, ॉ) प्रयोग किया जाए। जैसे - ऑक्सीजन, ऑर्डर, कॉफ़ी, कॉलेज, डॉक्टर, नॉलेज।

(iii) हिंदी में कुछ शब्द ऐसे हैं, जिनके दो-दो रूप बराबर चल रहे हैं। विद्वत्समाज में दोनों रूपों की एक-सी मान्यता है। कुछ उदाहरण हैं - गरदन/गर्दन, गरमी/गर्मी, बरफ़/बर्फ़, बिलकुल/बिल्कुल, सरदी/सर्दी, कुरसी/कुर्सी, फुरसत/फुर्सत, बरदाश्त/बर्दाश्त, बरतन/बर्तन, दोबारा/दुबारा आदि। इन वैकल्पिक रूपों में से पहले वाले रूप को प्राथमिकता दी जाए।

15. विरामादि चिह्न

(i) शिरोरेखा का प्रयोग प्रचलित रहेगा।

(ii) फुलस्टाप को छोड़कर शेष विरामादि चिह्न वही ग्रहण कर लिए जाएँ, जो अंग्रेज़ी में प्रचलित हैं।

जैसे- - ' : ; , - . / " " ?

अल्पविराम (,), अर्धविराम (;),
उपविराम (:), प्रश्नचिह्न (?),
विस्मयसूचक चिह्न या संबोधनसूचक चिह्न (!),
निर्देशक चिह्न (—), उद्धरण चिह्न ("-"),
शब्द या अवतरण चिह्न ('-'), विवरण या आदेश चिह्न (:-),
लोप चिह्न (..........), संक्षेपसूचक चिह्न (॰)
संयोजक चिह्न (-), कोष्ठक [{(-)}],
ऊर्ध्व अल्पविराम (;), तुल्यतासूचक चिह्न (=),
हंसपद (^)

(iii) फुलस्टॉप (पूर्णविराम) के लिए खड़ी पाई (।) का ही प्रयोग किया जाए।

◆◆◆